Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

ग्रामीण क्षेत्र के आर्थिक विकास में सामाजिक पुस्तकालय का योगदान

Priyanka Kumari[1]* Dr. Y. Meera Bai[2]

[1] Research Scholar, Kalinga University, Raipur

[2] PhD Supervisor, Kalinga University, Raipur

सार – ***आर्थिक विकास एक सापेक्षिक शब्द है तथा इसका संबंध एक समय विशेष से न होकर दीर्घकालीन परिवर्तन से है। आर्थिक विकास एक ऐसी निरंतर व अनवरत प्रक्रिया है जिसके परिणाम स्वरुप किसी भी देश में समस्त उत्पादन के साधनों का कुशलता पूर्वक प्रयोग होता है अर्थात राष्ट्रीय आय और साथ ही साथ प्रति व्यक्ति आय में दीर्घकालीन वृध्दि होती है परिणाम स्वरुप उत्पादन स्तर बढ़ता है जिससे देश का चहुंमुखी विकास उत्तरोत्तर बढ़ता है। दूसरे अर्थो में विकास का अर्थ केवल आर्थिक वृध्दि ही नही है बल्कि उसके साथ ही सामाजिक, सांस्कृतिक, संस्थागत तथा आर्थिक परिवर्तन को सम्मिलित किया जाता है। आर्थिक विकास एक अर्थव्यवस्था के संरचनात्मक ढांचे में आए सम्पूर्ण परिवर्तन की ओर इंगित करता है जिससे हम अविकसित से अर्धविकसित और पुनः विकासशील से विकसित अर्थव्यवस्था के रुप में देखते है।***

कीवर्ड - ग्रामीण क्षेत्र, सामाजिक पुस्तकालय

----------X----------

प्रस्तावना

आर्थिक विकास की कोई निश्चित और सर्वमान्य परिभाषा देना कठिन है। विभिन्न अर्थशास्त्रीयों ने इसकी परिभाषा आर्थिक विकास के विभिन्न मापों के आधार पर दी है लिप्से हार्वे, लेबिन्स्टीन आदि का मत है कि "आर्थिक विकास का अर्थ है लोगो के रहन सहन के स्तर में वृध्दि होनाष्।

संयुक्त राष्ट्र संघ के एक प्रतिवेदन के अनुसार "विकास मानव की केवल भौतिक आवश्यकताओं से ही नही बल्कि जीवन की सामाजिक दशाओं की उन्नति से भी संबंधित होना चाहिए। अतः विकास में सामाजिक, सांस्कृतिक, संस्थागत तथा आर्थिक परिवर्तन भी शामिल है।

मूल रुप में आर्थिक विकास का लक्ष्य वास्तविक आय की मात्र में दीर्धकालीन वृध्दि लाना है किन्तु यही आर्थिक विकास का एक मात्र लक्ष्य नही है। आर्थिक विकास अर्थ है राष्ट्रीय आय में वदि,आर्थिक संरचना में परिवर्तन, जनता का उच्चतर जीवन स्तर उनकी मान्यताओं एवं दृष्टिकोण में परिवर्तन, देश में उत्पादन क्षमता में वृध्दि तथा मानव का सर्वांगीण विकास। संक्षेप में आर्थिक विकास एक व्यापक आर्थिक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया है जिसके परिणाम स्वरुप अंतिम रुप से किसी देश की आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था में मूलभूत परिवर्तन देखने को मिलते है। सामाजिक उद्देश्य के बिना आर्थिक विकास कभी भी फलीभूत नही हो सकता है।

इस प्रकार आर्थिक विकास के अंतर्गत सृजनात्मक शक्तियों का जन्म होता है और नवीन उत्पादन होते है। अर्धविकसित अर्थ व्यवस्था के लिये आर्थिक विकास का अपेक्षाकृत अधिक महत्व होता है क्योकि इससे तीव्र विकास के लक्ष्य को गति प्राप्त होती है और अर्थ व्यवस्था के स्वरुप में आमूल परिवर्तन हो जाता है।

अतः "आर्थिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके परिणाम स्वरुप देश के समस्त उत्पादन साधनों का कुशलता पूर्वक प्रयोग होता है जिससे राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय में निरंतर व दीर्घकालीन वृध्दि होती है तथा जनता का जीवन स्तर एवं समाज कल्याण का सूचकांक बढ़ता है।

www.ignited.in

भारत के ग्रामीण अर्थव्यवस्था के आधार पर ग्रामीण आर्थिक विकास के परिपेक्ष्य में अगर हम विचार करे तो ग्रामीण जनसंख्या का जीवन स्तर में क्रमिक सुधार लाना अर्थात प्रति व्यक्ति आय में वृध्दि, उच्चतर जीवन स्तर,उनकी मान्यताओं व दृष्टिकोण में परिवर्तन तथा आर्थिक व सामाजिक संरचना में परिवर्तन करना है। इस हेतु ग्रामीण जनसंख्या में साक्षरता के प्रतिशत को बढ़ाना पहला कदम है जिससे ज्ञान का प्रसार हो तथा सामाजिक व संस्थागत पारपरिक में विचारों से ऊपर उठकर वे उन्नति कर सके, जीवन स्तर को ऊंचा कर सके तथा उनकी मान्यताओं व दृष्टिकोण में प्रगतिशील परिवर्तन हो।

महात्मा गांधी के अनुसार ग्रामीण अर्थ व्यवस्था में सुधार के लिये गांवों मे लघु व कुटीर उद्योगो का विकास तथा कृषि का विकास अत्यावश्यक है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने हेतु इन क्षेत्रों में उन्नत तकनीक, तकनीकी जानकारी, उद्योगो का विकेन्द्रीयकरण आदि आवश्यक है जिससे उत्पादन में गुणात्मक तथा परिमाणात्मक वृध्दि हो सके। ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के पर्याप्त अवसर. शिक्षा के पर्याप्त प्रचार प्रसार, आवश्यक जानकारियो की उपलब्धता आदि ऐसे अनेक बिन्द है जो ग्रामीण विकास व ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने हेतु आवश्यक है।

आर्थिक विकास को मापने के ढंगः- किसी भी देश के आर्थिक विकास को मापने के प्रमुख ढंग है।- 1. राष्ट्रीय आय 2. प्रति व्यक्ति आय 3. जीवन स्तर 4. सामाजिक कल्याण

1. **राष्ट्रीय आय -** आर्थिक विकास से वास्तविक राष्ट्रीय व प्रतिव्यक्ति आय में वृध्दि होती है। राष्ट्रीय आय से अर्थ एक वर्ष में जितनी वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन एक देश में होता है उसके मूल्य में से हास आदि घटाकर जो बचता है, उससे है। इसी को शुध्द राष्ट्रीय उत्पादन या वास्तविक राष्ट्रीय आय कहते है। आर्थिक विकास की स्थिति में इसमें वृध्दि होती है। भारत में 1950-51 में सकल राष्ट्रीय आय (चालु कीमतों पर)8979 करोड़ रुपये थी जो 1993-94 में बढ़कर 707145 करोड़ रुपये हो गई हैयद्यपि योजनाकाल में राष्ट्रीय आय में वृध्दि हुई है परन्तु वृद्धि की यह दर बहुत धीमी रही है।

2. **प्रति व्यक्ति आय -** जब राष्ट्रीय आय में कुल जनसंख्या का भाग दे देते है तो भागफल प्रति व्यक्ति औसत आय कहलाता है। आर्थिक विकास में इस प्रति व्यक्ति औसत आय में भी वृद्धि होती है। आर्थिक विकास का सूचक जीवन स्तर है और जीवन स्तर का निर्धारण प्रतिव्यक्ति आय से होता है अर्थात जब तक किसी देश के प्रति व्यक्ति आय में वृध्दि नही होती तब तक हम यह नहीं कह सकते कि राष्ट्र विकसित है। भारत में 70 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या गांवों में निवास करती है। अतः भारत का विकास तभी संभव है जब ग्रामीण जनसंख्या के आय तथा ग्रामीण प्रतिव्यक्ति आय में वृध्दि हो। अगर देश में किसी भी प्रकार की आर्थिक असमानता है तो हम उसे विकास का सूचक नही मान सकते है। अतः आवश्यक है कि आर्थिक विकास के लिये गांवों में रहने वाले लोगों के प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो।

3. **जीवन स्तर -** आर्थिक विकास का विश्वसनीय सूचक लोगो का जीवन स्तर है। कोई भी देश तभी प्रगतिशील कहलाएगा जब उसके निवासियों के जीवन स्तर में उत्तरोतर सुधार हो रहा हो। भारत जैसे विकासशील देश में शहरी व ग्रामीण जनसंख्या के जीवन स्तर में बहुत ज्यादा अतंर परिलक्षित होता है। शहरों में जहां लोगों के पास उपभोग की सभी वस्तुएं उपलब्ध होती है वही गांवों में आज भी लोग कुपोषण के शिकार है। ग्रामीण जनता के जीवन स्तर सुधारने के लिये उन्हे स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार के प्रति जागरुक करना अत्यंत आवश्यक है।

4. **सामाजिक कल्याण -** आर्थिक विकास का उद्देश्य आर्थिक असमानता में कमी लाना है भारत जैसे विकास शील देश में ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में बहुत अधिक आर्थिक असमानता है जो उनके सामाजिक जीवन को भी प्रभावित करता है। शहरों में जैसे चिकित्सा, शिक्षा,मनोरंजन आदि जनसाधारण की सभी सुविधाएं सरकारी व निजी क्षेत्रों में उपलब्ध है वही गांवों में अभी भी प्राथमिक चिकित्सा, शिक्षा स्तरीय नही है। पूरे देश में आर्थिक विकास के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में भी पर्याप्त रुप से सामाजिक सेवाओं पर व्यय करना आवश्यक है क्योकि आर्थिक विकास का एक उद्देश्य समाज कल्याण भी है। जिनके आय का स्तर कम है वे इन सेवाओं के लिये निजी क्षेत्र में नही जा सकते क्योकि निजी क्षेत्र में इन सुविधाओं के लिये अत्यधिक खर्च उठाना पड़ता है। अतः ऐसे लोगो के लिये कम से कम खर्च या निःशुल्क जनकल्याण की विभिन्न सुविधाएं मुहैया कराना आवश्यक है।

www.ignited.in

ग्रामीण आर्थिक विकास के घटक

प्रत्येक देश का आर्थिक विकास अनेक घटको से प्रभावित होता है इन्ही घटको को आर्थिक विकास के निर्धारक या तत्व या आधार कहते है। यह निर्धारक या तत्व कितने है इस पर अर्थशास्त्रियों में मत विभिन्नता है। प्रो. रेगनर नर्कसे के अनुसार " आर्थिक विकास का मानवीय शक्ति, सामाजिक मान्यताओं, राजनीतिक दशाओं एवं ऐतिहासिक दशाओं के साथ घनिष्ठ संबंध है। पूंजी आवश्यक तत्व है लेकिन आर्थिक विकास के लिये एक मात्र निर्धारक तत्व नही है वही प्रो. शुम्पीटर के मत में आर्थिक विकास के 5 निर्धारक तत्व है - उत्पादन की नवीन प्रणाली, अर्धनिर्मित व कच्चे माल के लिये नवीन साधनों की खोज, नवीन संगठन,नवीन वस्तुओं को शामिल करना एवं नवीन बाजार की खोज करना। जबकि मेयर एवं वाल्डविन ने आर्थिक विकास के निर्धारक तत्वों को दो भागों में बांटा है- " आधारभूत साधनों की पूर्ति तथा उत्पादित वस्तुओं की मांग की संरचना में परिवर्तन।

अतः आर्थिक विकास को निर्धारित करने वाले या प्रभावित करने वाले बहुत से घटक हो सकते है इन घटकों को मुख्यतः दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है आर्थिक घटक एवं अनार्थिक घटक।

आर्थिक घटकः- आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले आर्थिक घटक निम्न है -

- राष्ट्रीय आय में वृद्धि।
- प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि।
- प्राकृतिक साधनों का समुचित दोहन।
- मानवीय साधनों का कुशलता पूर्वक दोहन।
- पूंजी निर्माण की दर में वृद्धि।
- तकनीकी विकास को बढ़ावा।
- पूंजी अनुपात में वृद्धि।
- भुगतान संतुलन में वृद्धि (विदेशी पूंजी में बढ़ोत्तरी)।
- श्रेष्ठ संगठन।
- बाजार का उचित अवसर।

अनार्थिक घटकः- आर्थिक विकास के आधार या प्रभावित करने वाले अनार्थिक घटक निम्नलिखित हो सकते है -

- सामाजिक कल्याण में वृद्धि।
- सांस्कृतिक परिवर्तन।
- संस्थागत परिवर्तन।
- अंतर्राष्ट्रीय परिवर्तन।

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर ग्रामीण आर्थिक विकास की दृष्टि से विचार करे तो ग्रामीण आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले घटक भी दो भागों वर्गीकृत किये जा सकते है - आर्थिक एवं अनार्थिक घटक।

आर्थिक घटकः- आर्थिक घटक में हम निम्न बिन्दुओं को शामिल कर सकते है -

- यातायात के साधनों का विकास।
- श्रम विभाजन - विशिष्टकरण।
- उत्पादन को बढ़ावा।
- उद्योगों का विकास।
- पूंजीवाद का जन्म।
- मजदूर संगठन का उदय।
- आर्थिक पराश्रितता का समापन।
- आर्थिक प्रतिस्पर्धा का जन्म।

अनार्थिक घटकः- इनमें निम्न घटक हो सकते है यथा

- सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि।
- सामाजिक विघटन में कमी लाना।
- सांस्कृतिक संपर्क।
- सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक नियंत्रण।
- व्यवसायीकरण में परिवर्तन।
- शिक्षा प्रणाली में सुधार।

- कृषिगत यंत्रीकरण को प्रोत्साहन।
- उच्च प्रौद्योगिकीकरण।
- उन्नत यातायात एवं संचार व्यवस्था।

उपरोक्त वर्णित घटक आर्थिक विकास को प्रभावित करते है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में इन वर्णित तत्वों का क्रियाशील होना अत्यावश्यक है जिससे ग्रामीण विकास का गति को आगे बढ़ाया जा सके। भारत जैसे ग्रामीण बहुल देश में यही कारण है कि ग्रामीण

विकास को प्रारंभ से ही महत्व दिया गया है। तथा पंचवर्षीय योजनाओं, विभिन्न योजनाओं तथा केन्द्र व राज्य शासन के विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा ग्रामीण आर्थिक कल्याण हेतु पर्याप्त कदम उठाए गए है। झारखंडमें भी इस ओर भरसक प्रयास किये गए है धान का कटोरा कहे जाने वाले इस क्षेत्र में झारखंडका प्रमुख स्थान है तथा यहाँ की अधिकांश ग्रामीण जनसंख्या कृषि क्षेत्र में कार्यरत है। वही यहाँ पर वृहद व मध्यम उद्योग भी स्थापित है साथ ही साथ इस क्षेत्र में लघु व कुटीर उद्योगों की स्थापना भी की गई है। इसके साथ ही केन्द्र व राज्य शासन द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के विकास हेतु अनेक ऐसी योजनाएं इस क्षेत्र में क्रियान्वित कि गई है जिससे ग्रामीण जनसंख्या आत्मनिर्भर बन सके तथा इनका आर्थिक आधार सुदृढ़ हो सके। इससे

यह तथ्य भी निर्विवाद रूप से सत्य है कि आर्थिक विकास को सामाजिक सांस्कृतिक घटक भी प्रभावित करते है। अतः आर्थिक विकास के साथ-साथ इस क्षेत्र के सामाजिक सांस्कृतिक विकास हेतु भी ध्यान दिया गया है तथा ग्रामीण क्षेत्र में व्याप्त सामाजिक बुराइयो तथा सांस्कृतिक पिछड़ेपन को दूर करने का प्रयास किया गया है एवं किया जा रहा है ताकि लोग मानसिक रूप से उपर उठकर अपना आर्थिक विकास कर सके। (सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास हेतु उठाये गये कदमों की विवेचना अगले अध्याय मे की गयी है) अतः झारखंड के आर्थिक विकास में अपना योगदान देने वाले विभिन्न अभिकरणो की संक्षिप्त विवेचना आगे की गयी है।

ग्रामीण आर्थिक विकास के अभिकरण

उद्योगः- आजादी के पश्चात् जिले में औद्योगिक विकास हुआ जिससे वृहद उद्योग स्थापित हुये जो कि इस क्षेत्र के विकास को गति देने में सहायक सिध्द हुये हैं।

झारखण्ड में भारत के कुछ सर्वाधिक औद्योगिकृत स्थान यथा - जमशेदपुर, राँची, बोकारो एवं धनबाद इत्यादि स्थित हैं। झारखंड के उद्योगों में कुछ प्रमुख हैं भारत का सबसे बड़ा उर्वरक कारखाना सिंदरी में स्थित था जो अब बंद हो चुका है।भारत का पहला और विश्व का पाँचवां सबसे बड़ा इस्पात कारखाना टाटा स्टील जमशेदपुर में।एक और बड़ा इस्पात कारखाना बोकारो स्टील प्लांट बोकारो में।भारत का सबसे बड़ा आयुध कारखाना गोमिया में।मीथेन गैस का पहला प्लांटझारखण्ड में स्थित हैं।इन वहद उद्योगों के अलावा इस क्षेत्र में अनेक लघु उद्योग की भी स्थापना की गयी है जिनके लिये आवश्यक कच्चा माल इस क्षेत्र में उपलब्ध है। कृषि और पशुपालन में छोटे उद्योगो के विकास की व्यापक संभावनाये है जिसके लिये प्रयास किया जा रहा है।

बड़े और लघु उद्योग के अतिरिक्त कुछ ऐसे ग्रामीण उद्योग भी है जो सर्वथा ग्रामों के लिये उपयुक्त है। महात्मा गांधी ने कहा था जब तक गांवो का औद्योगीकरण नही होगा तब तक देश से गरीबी को दूर नही किया जा सकता। उनका स्वप्न था हर गांव मे छोटे-छोटे कुटीर उद्योग हो जो गांवों कीआवश्यकताओं की पूर्ति करे।

उनके इस स्वप्न को साकार करने हेतु राज्य शासन ने 1970 में पहली बार ग्रामोद्योग को प्रोत्साहन देने के लिये उपक्रम चलाया। पांचवी पंचवर्षीय योजना में जिला उद्योग केन्द्रो में लघु तथा ग्रामीण उद्यमियों को सहायता प्रदान करने हेतु योजना समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम लागू किया गया। खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग ने ग्रामीण उद्योग को प्रोत्साहन देने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। इन प्रयासो के फलस्वरूप ग्रामीण तथा लघु उद्योग के क्षेत्रो में उद्योग स्थापित हुये। ग्रामीण अंचल में उसकी निर्धनता दूर करने के लिये ग्रामीण बैंक के दारा भी ग्रामीणो के उद्योग के लिये ऋण देने की व्यवस्था की गई जिससे ग्रामीण उद्योग को प्रोत्साहन मिल सके। ग्रामीण क्षेत्र के उद्योगो में कुछ प्रमुख उद्योग है-

1. **कुक्कुट उद्योगः-** इस क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रो मे कुक्कुट पालन एक विशेष महत्व रखता है। पशु चिकित्सालय विभाग की अनेक हेचरियां स्थापित की गई है जहां से ग्रामो को आपूर्ति की जाती है। 15 दिन के चूजे तथा कुक्कुट आदिवासियों और हरिजनों को मुफ्त दिये गये है। वे इन्हे घरो में कुक्कुट पालन इकाईयो में पालते है और बिक्री कर लाभ उठाते है। परन्तु यह उद्योग ग्रामीण होते हुये भी गांवो में अधिक न चलकर शहरी क्षेत्र अधिक चल रहा है।
2. **डेयरी फार्मः-** इस उद्योग को स्थापित करने हेतु योजना के माध्यम से कृत्रिम गर्भरोपण के द्वारा

www.ignited.in

स्थानीय पशुओं की नस्ल को सुधारने का प्रयास किया जाता है। हिमीकृत वीर्य की आपूर्ति बढ़ाने हेतु हिमीकृत नत्रजन संयंत्र स्थापित किये गए। एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम के तहत् अच्छा दुध देने वाली गाय और भैंसों का वितरण किया गया। ग्रामीणों की आर्थिक दशा सुधारने के लिए डेयरी विकास की योजना को भी महत्व दिया गया।

3. **कुम्हारों का उद्योगः-** ग्रामीण अंचल में कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाना, मूर्ति बनाना और खिलौने बनाने में बड़े सिध्दहस्त होते है। अन्य मौसम में धुपदानी, गमला आदि बनाकर अपनी जीविका चलाते है अतः इस उद्योग को भी महत्व देकर इससे संबंधित उद्योग को बढ़ावा देना आवश्यक समझा गया।

4. **खपरा एवं ईट बनाने का उद्योगः-** झारखण्ड के कईमें जिले में गांव-गांव में यह उद्योग वंशानुगत है क्योकि गांव-गांव के प्रायः सभी घर खपरों पर अविलंबित रहते है। अतः खपरो की खपत इस क्षेत्र में अत्यधिक है। इसी प्रकार ईट निर्माण भी महत्वपूर्ण ग्रामीण उद्योग है। ईट निर्माण में प्रयोग की जाने वाली मिट्टी इस क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में है अतः इन दोनो ग्रामीण उद्योगों को भी महत्व दिया गया है।

5. **मत्स्य पालन उद्योगः-** इस अंचल में मछली उत्पादन की असीम संभावनाएं है। गांवो के तालाबों सिंचाई जलाशयों में मछली पालन को बढावा दिया जा रहा है। मछली बीज का उत्पादन शासकीय और निजी दोनों क्षेत्रों में बढ़ाया जा रहा है। मत्स्य पालन योजना के अंतर्गत झारखण्ड में एक चायनीज टाईप हेचरी के निर्माण हेतु 20 लाख रुपये का प्रावधान किया गया है बाद में इस उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिए झारखण्ड़ विकास प्राधिकरण की मत्स्य पालन योजना में कई जिले में चायनीज हेचरी के अंतर्गत इंटेकवेल निर्माण हेतु वर्ष 1986-87 में 300 लाख रुपये के आबंटित किये गए थे। इस प्रकार मत्स्य पालन उद्योग को इस क्षेत्र में काफी प्रोत्साहन दिया गया है।

6. **मधुमक्खी उद्योगः-** खादी और ग्रामोद्योग आयोग में मधुमक्खी उद्योग को अच्छा प्रोत्साहन दिया है। आयोग ने अन्य राज्यों के उद्योग मंडल द्वारा मधुमक्खी पालने के लिए तकनीकी सहयोग लेकर इस उद्योग को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया है।

इसके अलावा शासन द्वारा इस क्षेत्र के विकास हेतु चलाए जा रहे विशिष्ट कार्यक्रम भी यहाँ क्रियान्वित किये जा रहे है जिससे इस क्षेत्र का आर्थिक विकास हो सके।

ग्रामीण आर्थिक पिछड़ेपन के कारण

विदेशी विद्वानों ने भारतीय अर्थव्यवस्था के बारे में अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है कि भारत एक धनी देश है परन्तु यहाँ के निवासी निर्धन है। इसमें कोई दो मत नही है कि भारत एक धनी देश है। यहाँ के प्राकृतिक व अन्य साधन, भौगोलिक स्थिति, विभिन्न वायु जो कि विभिन्न फसलों के लिए उपयुक्त है, वन संपदा, खनिज भंडार, ऊपजाऊ जमीन, जल भडार, विशाल शक्ति साधन, प्रचुर पशुधन तथा अपार जनशक्ति इस देश को धनी साबित करती है। परन्तु इन प्राकृतिक व अन्य साधनों का विदोहन उचित प्रकार से नही कर पाने के कारण इस देश के निवासी निर्धन है। इनका निम्न जीवन स्तर तथा सामाजिक व शैक्षणिक पिछड़ापन इनकी निर्धनता को प्रतिबिंबित करता है। आकडें बताते है कि "भारत में प्रति व्यक्ति आय केवल 310 डालर है जबकि विश्व की प्रति व्यक्ति औसत आय 4280 डालर है इन परिस्थितियों में ग्रामीण क्षेत्र की स्थिति और भी खराब है जहाँ अशिक्षा, अज्ञानता व जागरुकता की कमी ने इस क्षेत्र के नागरिको को आर्थिक विकास में बहुत पीछे रखा है।

ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन, विभिन्न प्रयासों के बावजूद निर्धनता बनी हुई है। ग्रामीण क्षेत्र में अभी भी प्रति व्यक्ति औसत आय के स्तर को छु नही पाते है उनके जीवन स्तर में वर्तमान समय तक भी कोई खास बदलाव परिलक्षित नही होता है यथा - स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता का अभाव, खान-पान का निम्न स्तर, जीवन के लिए आवश्यक चीजों का अभाव आदि ऐसे अनेक आधार भूत तथ्य है जिनकी कमी अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में सामान्य तौर पर दिखाई देती है जो इस बात का संकेत करती है कि ग्रामीण क्षेत्रों का आर्थिक विकास उस स्तर तक नही पहुँचा है जहाँ पर यह कहाँ जा सके कि वे सुदृढ़ अवस्था में है।

किसी भी देश अथवा क्षेत्र का आर्थिक विकास वहाँ के आंतरिक व बाह्य तत्वों पर भी निर्भर करता है। जैसा कि पूर्व में वर्णित है कुछ ऐसे घटक होते है जो आर्थिक विकास को प्रभावित करते है। भारतीय संदर्भ में विशेष कर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों के संदर्भ में यदि हम विचार करें तो भारतीय ग्रामों का, ग्रामीणों का विकास निश्चित रुप से उस क्षेत्र के विशिष्ट घटकों पर निर्भर करता है। ग्रामीण आर्थिक विकास

को प्रभावित करने वाले वे तत्व जिनका कि पूर्व में उल्लेख किया गया है निश्चित रुप से आर्थिक विकास को बढ़ाने में मदद करेंगें।

गांवों में यातायात की कमी उनको शहरी क्षेत्र से पूर्णतः अलग करती है। इस क्षेत्र में भी अनेक ऐसे विकास खंड व ग्राम पंचायत है जो कि जिला मुख्यालय से 100-120 कि .मी. दूर है उनसे यह कैसे उम्मीद की जा सकती है कि वे शहरी क्षेत्र में होने वाले आर्थिक विकास से प्रभावित होकर स्वयं का विकास करें। शहरी क्षेत्र में होने वाले तकनीकी विकास तथा उनके फलस्वरुप उत्पादनों का अंबार, बाजार में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा जिसके फलस्वरुप पूँजी निर्माण की दर में वृद्धि, मानवीय संसाधनों का भरपूर दोहन आदि वे कारण है जो कि शहरी आर्थिक विकास की गति को तेज करते है। समस्त सुविधाओं के प्राप्त होने के कारण शहरी क्षेत्र का व्यक्ति अपने समय व श्रम का कम से कम लागत में अधिकतम उपयोग करता है वही ग्रामीण क्षेत्र में प्रथम तो प्रतिस्पर्धा का पूर्णतः अभाव होता है तथा बाजार की वास्तविकताओं से दूर वे अपना श्रम व समय जितना लगाते है उतनी पूँजी का निर्माण वे नही कर पाते है। जिसके पीछे आर्थिक प्रतिस्पर्धा का अभाव है और न ही वे इस ओर प्रयास करते पाए जाते है कि उनके उत्पादन बढ़ सके। आर्थिक पराश्रितता एक दूसरा महत्वपूर्ण कारण है जो उनके आर्थिक विकास को रोकता है। उदाहरण के लिए सामान्य तौर पर ग्रामीण क्षेत्र का व्यक्ति जो अपनी सीमित जमीन पर कृषि उत्पादन कर अपने

परिवार का भरण पोषण करता है वह एक वर्ष में परंपरागत तरीके से फसलों का उत्पादन उतना नही कर पता जितने से वह वर्ष भर अपने परिवार का भरण पोषण कर सके तथा आने वाले वर्षों में फसल उत्पादन हेतु धन की बचत कर सके। तब वह इन समस्याओं से निपटने हेतु कर्ज का सहारा लेता है। फसल के उत्पादन पर उस कर्ज की अदायगी के बाद बाकी बचे उत्पादन से अपने परिवार का पोषण करता है और आने वाले वर्ष के लिए पुनः वही प्रक्रिया दोहराता है। यदि विपरीत परिस्थितियाँ हो और फसलों का उत्पादन ठीक से न हो पाता हो तो उसकी स्थिति और भी बदतर हो जाती है। इस आर्थिक परतंत्रता से मुक्त हुये बिना उसका आर्थिक विकास असंभव है।

पुस्तकालय और आर्थिक विकास

किसी भी व्यक्ति का आर्थिक विकास न केवल उसके जीवन स्तर को बेहतर बनाता है अपितु उसकी आय में वृध्दि के साथ-साथ उसकी सामाजिक स्थिति को भी ऊंचा उठाता है। जब तक व्यक्ति रुढ़िवादी सामाजिक बंधनों से स्वयं को मुक्त नही करेगा उसका आर्थिक विकास अवरुध्द रहेगा। सामाजिक मान्यताओं व कुरीतियों से घिरा एक व्यक्ति स्वयं को उतना स्वतंत्र नही पाता जिससे वह मुक्त होकर कोई कार्य कर सके तथा अपनी आय में वृध्दि कर सके। सामाजिक बिन्दु पर हम विचार करे तो यह ज्ञात होता है कि रुढ़िवादी मान्यताएं, कुपोषण, अशिक्षा, स्वास्थ्य आदि ऐसी अनेक बाते है जो कि ग्रामीण क्षेत्रों में सामान्य रुप से देखने को मिलती है। ये ऐसी समस्याएं है जो कि ग्रामीणों की दिनचर्या, उनकी कार्य क्षमता को प्रभावित करती है। पुस्तकालय इन समस्याओं से निजात दिलाने में मित्रवत सहायता कर सकता है ज्ञान सभी समस्याओं का हल है और पुस्तकालय ज्ञान का भंडार है। सामाजिक समस्याओं से निपटने हेतु नागरिको को जागरुक करना अतिआवश्यक है जो कि पुस्तकालय के माध्यम से आसानीसे किया जा सकता है। अध्ययन व ज्ञान ऐसे अचूक बाण है जो कि सीधे लक्ष्य को भेदते है अर्थात अध्ययन व ज्ञान के माध्यम से ग्रामीण जनता में जागरुकता पैदा कर उनको इन समस्याओं से ऊपर उठने मे मदद की जा सकती है। स्वस्थ मनुष्य के लिए उन सभी तथ्यों का ज्ञान पुस्तकालय अपने पाठ्य सामाग्री के माध्यम से आम व्यक्ति के मध्य पहुँचा सकता है।

अतः सामाजिक बदलाव व्यक्ति की सोच में परिवर्तन करता है व उसे और अधिक क्रियाशील बनाता है जिससे वह उन क्षेत्रों में आगे बढ़ सकता है जहाँ वह और अधिक पूँजी का निर्माण कर सके तथा अपनी आय में वृध्दि कर सके। परिवर्तन, धनात्मक सामाजिक बदलाव व आय में वृध्दि स्वतः ही व्यक्ति के जीवन स्तर में बदलाव लाएगी तथा उसका विकास आगे बढ़ेगा।

आर्थिक विकास के वे घटक जो विकास को प्रभावित करते है उसे उस समाज के चारों ओर ही विकसित होने चाहिए यथा

- श्रम विभाजन
- उद्योगों का विकास
- पूँजीवाद का जन्म
- आर्थिक पराश्रितता का समापन
- व्यवसायी करण में परिवर्तन
- सामाजिक गतिशीलता में वृध्दि

www.ignited.in

- शिक्षा प्रणाली में सुधार
- कृषिगत यंत्रीकरण को प्रोत्साहन आदि आदि

वे तत्व है जो ग्रामीण आर्थिक विकास को प्रभावित करते है। अर्थात ये तत्व उनके आर्थिक विकास में सहायक है परन्तु इन तत्व का वहाँ क्रियाशील होना अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष

आर्थिक विकास की प्रक्रिया में विभिन्न चरण आते है तथा इसे प्रभावित करने वाले घटक भी अनेक है। अर्थात आर्थिक विकास स्वयं फूर्त न होकर विभिन्न तत्वों से प्रभावित होता है।

इन तत्वों या प्रभावों का उन क्षेत्रो में क्रियाशील होना अत्यावश्यक है जहाँ इस तरह के विकास की नितांत आवश्यकता है। तत्व या घटक स्वयं ही क्रियाशील नही होगें बल्कि इन्हें क्रियाशील करना पड़ेगा क्रियाशील करने हेतु एक संतुलित व निश्चित दिशा में कार्य भी करना होगा जिससे सामान्य जन-जीवन धीरे-धीरे इसके प्रभाव में आए तथा प्रभावित होकर स्वयं का विकास कर सके। ग्रामीण क्षेत्र में इस तरह के तत्वों को प्रभावशील करने में पुस्तकालय प्रभावी ढंग से कार्य कर सकता है। इसके साथ ही साथ ग्रामीण आर्थिक विकास के अभिकरणों के सफल व लाभकारी उपयोग हेतु भी पुस्तकालय एक अच्छा माध्यम है क्योकि इस माध्यम से ग्रामीण जनता को सही समय पर निश्चित व आवश्यक सूचनाएं प्राप्त होती रहेंगी जिसका फायदा ग्रामीण जनजीवन उठा सकेंगे। ग्रामीण पिछड़ेपन के विभिन्न कारणों को पुस्तकालय द्वारा आसानी से कम किया जा सकता है। प्रदर्शनी, चलचित्रो, व्याख्यानों, साहित्य, पत्र-पत्रिकाए एवं संदर्भ सेवा द्वारा ग्रामीण मन मस्तिष्क में उपयोगी व लाभकारी परिवर्तन से उनकी सोच को धनात्मक व विकासशील दिशा में मोड़ा जा सकता है जिससे वे संकीर्ण मानसिकता व अज्ञानता से ऊपर उठकर अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकेगे। ये स्थिति न केवल उनकी औसत आय में वृध्दि करेगी अपितू सामाजिक रुप से भी बेहतर स्थिति प्रदान करेगी जिससे वे अन्य विकसित समाज की बराबरी में आ सकेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. छत्तीसगढ़ लोकरंग स्मारिकाः रायपुर (छत्तीसगढ़ लोकरंग)
2. जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, जिला- बिलासपुर ड्वाकरा योजनाः ग्रामीण 3 महिलाओं एवं बच्चों की योजना, 1994-95
3. जिला सांख्यिकी पुस्तिका 1971
4. जिला सांख्यिकी पुस्तिका 1981
5. जिला सांख्यिकी पुस्तिका 1991
6. जिला सांख्यिकी पुस्तिका 1995
7. जैन, दशरथः समाज एवं संस्कृति: भोपालः म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 1985
8. जैन, शशी के.: ग्रामीण समाज शास्त्र: नई दिल्लीः रिसर्च पब्लिकेशन
9. जोशी, ओमप्रकाश: ग्रामीण नगरीय समाज शास्त्र: दिल्ली: रिसर्च पब्लिकेशन, 1984
10. जोशी, ओम प्रकाश: भारत में सामाजिक परिवर्तन: दिल्ली: रिसर्च पब्लिकेशन, 1992
11. ताम्रकार, आर.बी.: समाजशास्त्र: आगरा: रामप्रसाद एण्ड संस, 1994
12. तिजारे, सुनन्दा: बिलासपुर संभाग में ग्रामीण विकास अभिकरणों का आर्थिक अध्ययन (शोध प्रबंध): गुरू घासीदास वि.वि. बिलासपुर (म.प्र.) 1995

Corresponding Author

Priyanka Kumari*

Research Scholar, Kalinga University, Raipur